BA Sem III विषय - हिन्दी मुख्यांश प्रतिष्ठा (C) - 5

डॉ॰ पारुल स्टीस्टीना/सारथी

छायावादोत्तर हिन्दी कविता

- प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता -:

"प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आन्दोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु को उत्तर छायावादी काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थ-वाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी।"

प्रगतिवादी काव्य की संज्ञा उस काव्य को दी गई जो छायावाद के उपरांत सन् 1936 ई॰ के आसपास शोषण के विरुद्ध नई चेतना लेकर रचा गया। मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना एवं भावबोध को लेकर निर्मित इन कविताओं के लिए तत्कालीन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य भी सहायक सिद्ध हुआ। छायावाद की व्यक्तिवादी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी प्रगतिवादी काव्य के रूप में हुई है। प्रमुख कवि- नागार्जुन, केदानाथ

प्रयोगवाद - हिन्दी में प्रयोगवाद शब्द उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जो सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तारसप्तक' के माध्यम से प्रकाश में आई। 'प्रयोगवाद' का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए कुछ आलोचकों ने यह कहा कि इस धारा के कवि नवीन प्रयोग करने में विश्वास करते हैं। भाषा, शिल्प, भाव, प्रतीक बिम्ब सभी दृष्टियों से 'प्रयोग' करना ही इनका इष्ट है। किंतु अज्ञेय जी ने दूसरे तार सप्तक की भूमिका में इसका खण्डन करते हुए कहा- "प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन वह दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उस प्रेषण क्रिया को और उसके साधनों को जानने का साधन है।"

नई कविता - प्रयोगवाद के उपरांत नई कविता का विकास हुआ। ऐसी कविताएँ जिसमें नए भावबोध, नए मूल्य एवं नए शिल्प-विधान को अपनाया गया, नई कविता के नाम से जाना जाता है। 1953 ई॰ के बाद की कविताओं को नई कविता की संज्ञा दी गई। प्रयोगवाद के बिखराव को नई कविता में कांट-छांटकर एक सजा संवरा रूप प्रदान किया गया। तथा प्रयोग वैशिष्ट्य के स्थान पर नवीन शिल्प को उसमें महत्व दिया गया।

BA Sem II विषय - हिन्दी मुख्यांश प्रतिष्ठा (C) - 3

डॉ० पारुल श्रीस्टीना
खलसी

रीतिकाल एवं रीतिकालीन कविता

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवत 1700 वि० से 1900 वि० तक के काल - खण्ड को रीतिकाल कहा है।

- अलंकृत काल - यह नाम मिश्र बंधुओं ने दिया है।
- शृंगार काल - यह नाम विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया है।
- रीतिकाल - यह नाम आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दिया है।

- रीतिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि -

i) राजनीतिक परिस्थितियाँ।
ii) सामाजिक परिस्थितियाँ।
iii) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

- रीतिकाल का वर्गीकरण -

रीति (निरूपण) के आधार पर इसे तीन वर्गों में बांटा गया है —

क) रीतिबद्ध - इस वर्ग में वे कवि आते हैं जो 'रीति' के बंधन में बंधे हुए हैं। अर्थात जिन्होंने रीति या लक्षण ग्रंथों की रचना की। जिनमें प्रमुख हैं - चिंतामणि, मतिराम, देव, जसवंतसिंह, कुलपति मिश्र, मण्डन, सूरति मिश्र, सोमनाथ, भिखारीदास, दूलह, रघुनाथ, रसिकगोविन्द, प्रतापसिंह।

ख) रीतिमुक्त - इसमें ऐसे कवि आते हैं जो रीति के बंधन से पूर्णतः मुक्त हैं। इन कवियों में प्रमुख है - घनानन्द बोधा, आलम और ठाकुर।

ग) रीतिसिद्ध - इस वर्ग में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रंथ नहीं लिखे किंतु 'रीति' की उन्हें भलि-भांति जानकारी थी। वे रीति (लक्षण) में पारंगत थे। इन्होंने इस जानकारी का पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रंथों में किया है। इस वर्ग के प्रतिनिधि कवि हैं - बिहारी।

B.A. Sem I विषय - हिन्दी मुख्यांश प्रतिज्ञा(C)-1
डॉ० पारुल स्त्रीस्तीना सक्सेना

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल)

इकाई - I — हिन्दी में साहित्येतिहास लेखन की परम्परा -:

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखने की शुरुआत 19वीं शताब्दी से माना जाता है। मध्यकाल में रचित वार्ता साहित्य चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल आदि में अनेक कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय मिल जाता है। इतिहास लेखन के लिए जो काल-क्रमानुसार वर्णन अपेक्षित होता है उसका अभाव है अतः इसे साहित्य इतिहास नहीं कहा जा सकता है। साहित्य इतिहास लेखन परम्परा इस प्रकार है —

(1) गार्सां - द - तासी - "इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी" (प्र० प्रकाशन - 1839 ई., द्वि० प्रकाशन 1847 ई०)
(2) शिवसिंह सेंगर - "शिवसिंह सरोज" (1883 ई०)
(3) सर जॉर्ज ग्रियर्सन - 'द माडर्न वर्नेक्यूलर लितरेचर ऑफ हिन्दुस्तान (1888 ई.)
(4) मिश्र बंधु - 'मिश्र बंधु - विनोद' (प्रथम भाग 1913, द्वि० भाग 1914) (5000 कवियों के संबंध में विवरण)
(5) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929 ई.) - 900 वर्षों के अपने इतिहास को चार कालों में विभक्त किया है -
क) आदिकाल (वीरगाथा काल) सं० 1050 - 1375 वि०
ख) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) सं० 1375 - 1700 वि०
ग) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) सं० 1700 - 1900 वि०
घ) आधुनिक काल (गद्य काल) सं० 1900 - 1984 वि०
(6) डॉ० रामकुमार वर्मा - 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' (1938 ई.)
(7) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी - क) हिन्दी साहित्य की भूमिका।
ख) हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास।
ग) हिन्दी साहित्य का आदिकाल।
(8) डॉ० गणपति चंद्र गुप्त - 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'।
(9) हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (सम्पादित पुस्तक)।

B.A. Sem I विषय - हिन्दी मुख्यांश प्रतिष्ठा (C) - 1

डॉ० पारुल श्रीस्टीना खत्रशे

- आदिकालीन साहित्यिक परिस्थितियाँ -:

किसी काल विशेष के साहित्य में पायी जाने वाली प्रवृत्तियाँ तत्कालीन परिस्थितियों के सापेक्ष होती हैं। आदिकाल साहित्य में जो प्रमुख विशेषताएँ हैं वे तद्युगीन परिस्थितियों से विकसित हुई हैं। ये परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं -

1. राजनीतिक परिस्थिति।
2. धार्मिक परिस्थिति।
3. सामाजिक परिस्थिति।
4. साहित्यिक परिस्थिति।
5. सांस्कृतिक परिस्थिति।

- आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ -:

साहित्य में उपलब्ध होने वाली प्रवृत्तियाँ तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में देखी जाती है। आदिकाल में प्रमुख रूप से रासो साहित्य की रचना हुई अतः आदिकालीन प्रवृत्तियाँ रासो साहित्य की प्रवृत्तियाँ मानी जा सकती है। सामान्य प्रवृत्ति ~~का विवेचन~~ निम्नलिखित हैं -

1) ऐतिहासिकता का अभाव।
2. युद्ध-वर्णन में सजीवता।
3. प्रामाणिकता में संदेह।
4. वीर एवं शृंगार रस की प्रधानता।
5. आश्रयदाताओं की प्रशंसा।
6. संकुचित राष्ट्रीयता।
7. कल्पना की प्रचुरता।
8. विविध छंदों का प्रयोग।
9. डिंगल - पिंगल भाषा का प्रयोग।
10. अलंकारों का स्वाभाविक समावेश।

M. A. Sem I

सूरदास के भ्रमरगीतों का काव्य-सौन्दर्य

डॉ० शुभा प्रसाद

'सूरसागर' में भ्रमरगीत के प्रसंग

को आधक और अवस्थित स्वरूप देने का श्रेय सूरदास को है। भक्तिकाल के कवि सूरदास का जन्म सीही नामक स्थान माना जाता है लेकिन पं० रामचन्द्र शुक्ल ने रुनकता ग्राम को सूरदास का जन्म स्थान माना है। जन्म संवत् 1540 और मृत्यु 1620 निश्चित किया जाता है। 'साहित्य-लहरी' में कवि ने अपना जो परिचय दिया है उसके अनुसार महाकवि चन्दबरदाई की वंश-परम्परा से उनका सम्बन्ध मालूम होता है। कवि के विषय में यह उल्लेखनीय मिलता है कि वे जन्म से ही नेत्रहीन थे। परन्तु, ईश्वर की कृपा से उनकी नेत्र-ज्योति खोल दी जिससे उन्होंने ईश्वर के दिव्य रूप का दर्शन किया।

सूरदास के भ्रमर-गीतों की जो प्रसिद्धि है, वह करीब चार सौ पदों का है। 'भ्रमरगीत' में गुरुभक्त, प्रेम और विरह की अंजना हुई है। कवि ने गोपियों के माध्यम से अपनी प्रेमानुभूति की अभिव्यंजना की है। यह प्रेम संवेदना विशुद्ध मानवीय है। कवि ने विभिन्न उपमानों के माध्यम से मीन चातक कमल, पतंग, मृग आदि के द्वारा गोपियों की प्रेम-भावना को नैसर्गिक सिद्ध किया है।

यही कारण है कि विरह की अवस्था में निर्गुण के उपदेशक उद्धव के प्रति गोपियाँ व्यंग्य करती हैं। वे बतलाती हैं कि उनकी प्रेमभक्ति में तल्लीनता, त्याग, निष्ठा, प्रेम रस में ही आध्यात्मिक आस्वादन उन्हें मिल चुका है।

ब्रजभाषा में लिखित 'भ्रमरगीत' की विशेषता भावानुकूल शब्दों का विन्यास, योग की सैद्धान्तिक शब्दावली का समावेश, दास-परिहास, तद्भव शब्दों का प्रयोग, माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि गुण हैं। अलंकारों में सादृश्यमूलक, उपमानों, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, अतिरेक का प्रयोग है।

M.A. Sem I

विद्यापति का काव्य

[डॉ० मृदुला प्रसाद]

लौकिक प्रेम और सौंदर्य के कवि विद्यापति आदिकालीन माने गये हैं। इनका जन्म 1350 ई० के आस-पास माना जा सकता। राजा शिवसिंह के पहले राजा कीर्तिसिंह विद्यापति के प्रथम आश्रयदाता थे। बाद में राजा शिवसिंह और उनकी रानी लखिमा देवी के समय विद्यापति के काव्य का पूर्ण विकास हुआ।

विद्यापति की काव्य-प्रतिभा के ही कारण दिल्ली के नसरतशाह नसीरुद्दीन महमूद प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रसन्न होकर शिवसिंह को मुक्त किया। शिवसिंह ने इसलिए प्रसन्न होकर विसपी नामक गाँव विद्यापति को दिया और उन्हें 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया।

विद्यापति की काव्य-भाषा संस्कृत, मैथिली और अपभ्रंश है। उनकी प्रसिद्ध काव्य-पुस्तक 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' है, मैथिली में रचित उनकी 'पदावली' है।

विद्यापति के पदों को अध्यात्ममूलक शृंगारवादी माना है। जबकि जॉर्ज ग्रियर्सन ने विद्यापति को रहस्यवादी मानते हुए उनके प्रेम को राधा के कृष्ण के प्रति किये गये प्रेम के समान माना है।

निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पदावली का शृंगार लौकिक शृंगार है। इसलिए विद्यापति लिखते हैं — "माधव हम परिनाम निरासा।
आध जनम हम नींद गमायनु, जरा सिसुकत दिन गेला।
निधुवन रमनि रभस रंग मातनु, तोहे भजब कौन बेला।

M.A. Sem II

काव्य-शास्त्र में शब्द-शक्ति का महत्व

[डॉ० मृदुला प्रसाद]

काव्य में शब्द और अर्थ के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। इसके बिना काव्यानंद की प्राप्ति नहीं हो सकती है। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्द का एक अर्थ प्रचलित और प्रसिद्ध रहता है। इसलिए उस शब्द को सुनते ही वह अर्थ मन में अनायास जग पड़ता है।

इसी आधार पर शब्द के प्रसिद्ध अर्थ समाज में प्रसिद्ध होते हैं। इसी स्तर पर प्रयुक्त शब्द को वाचक, उससे प्राप्त अर्थ को वाच्य और शब्द से अर्थ प्राप्त करनेवाली शक्ति को अभिधा कहते हैं।

परंतु, हमेशा हम शब्द का प्रसिद्ध अर्थ नहीं लेते हैं। जैसे स्थूलकाय मनुष्य को दिखाकर कहना - देखो हाथी आ रहा है। यहाँ इसका अर्थ हाथी नामक पशु न होकर मनुष्य है। इसलिए जब अभिधा शक्ति का कार्य समाप्त हो जाता है तो हमें लक्षणा की सहायता लेनी पड़ती है। लक्षणा में मुख्यार्थ में बाध होता है, मुख्यार्थ-लक्ष्यार्थ का संबंध स्थापित होता है और रूढ़ि अथवा प्रयोजन से शब्दों का अर्थ किया जाता है। इस आधार लक्षणा के प्रमुख भेद हैं - प्रयोजनवती लक्षणा, रूढ़ी लक्षणा, गौणी लक्षणा, शुद्धा लक्षणा, उपादान-लक्षणा, लक्षण-लक्षणा, सारोपा और साध्यवसाना लक्षणा।

अभिधा और लक्षणा की सीमा के बाहर पड़नेवाले अर्थ को जो शक्ति व्यक्त होती है उसे व्यंजना कहते हैं। व्यंजना शक्ति से जो अर्थ निकलता है उसे व्यंजक कहते हैं। इसप्रकार, व्यंग्यार्थ को काव्य की आत्मा माना गया है। व्यंजना शाब्दी और आर्थी दो प्रकार की होती है

B. A. Sem III

हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा

डॉ० मुकुल प्रसाद

कहानी के सूत्र वैदिक साहित्य में मिलते हैं। जिस कहानी की बात यहाँ की जा रही है उसकी चर्चा आचार्य रामहे ने 'कथा' और 'गाथा' के रूप में की है। उसके बाद आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में गद्य साहित्य के अन्तर्गत कथा तथा आख्यायिका की चर्चा की है। तात्पर्य यह है कि कहानी एक ऐसी विधा है जिसका सम्बन्ध घटना से है जो भिन्न-भिन्न प्रकृति के मनुष्यों को भिन्न-भिन्न रूप से प्रभावित करती है।

भारतेन्दु के पूर्व चर्चित कहानियों में लल्लूलाल की सिंहासन बत्तीसी, बैताल पचीसी, प्रेमसागर, सदल मिश्र की नासिकेतोपाख्यान शिव प्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना' की चर्चा की जाती है।

इसके पश्चात् 1890 ई० में किशोरीलाल देवकी नन्दन खत्री की चन्द्रकान्ता का हिन्दी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। फिर 1903 में 'ग्यारह वर्ष का समय' किशोरीलाल गोस्वामी की रचना है से हिन्दी कथा-लेखन की शुरुआत होती है।

बंग महिला की 'दुलाईवाली', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी से सच्चे अर्थों में हिन्दी में मौलिक कथा-लेखन की शुरुआत होती है।

कथा-विकास का दूसरा चरण प्रेमचन्द का है। प्रेमचन्द की 300 कहानियों ने हिन्दी कथा जगत में कल्पना को छोड़कर यथार्थ चित्रण को महत्व को स्थापित किया।

प्रेमचन्द के बाद का युग मनोविश्लेषणात्मक कहानियों, सामाजिक कहानियों, राजनीतिक, मानवतावादी महत्व वर्ग के चित्रण की कहानियों का युग है। आजादी के बाद का युग मानवीय मूल्यों, संवेदनात्मक आँचलिक और नैतिक मूल्यों की स्थापना का है।

नाम :- राहुल मिश्रा

Page No. :
Date :

Foot note (पाद टिप्पणी)

B.A. PART(I), SEM (I), पत्र संख्या 2.

हिन्दी साहित्य का इतिहास, 'भक्तिकाल'

- भक्ति आन्दोलन के कारण :-

- आचार्य रामचन्द्र शुक्लने भक्ति आन्दोलन के उदय के निम्न कारण बताए हैं :-

(क) देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने से हिन्दू जनता हताश, निराश एवं पराजित हो गई थी। पराजित मनोवृत्ति में ईश्वर की भक्ति की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक था।

(ख) भक्ति का मूल स्रोत दक्षिण भारत में था। 7वीं शती में आलवार भक्तों ने जो भक्ति भावना प्रारम्भ की उसे उत्तर भारत में फैलने के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्राप्त हुई।

- भक्ति आन्दोलन के उदय की पृष्ठभूमि या परिस्थितियां :-

(क) राजनीतिक परिस्थिति
(ख) सामाजिक परिस्थिति
(ग) धार्मिक परिस्थिति।

- हिन्दी सन्त काव्य परंपरा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :-

(क) सन्त काव्य भाव प्रधान है, कला प्रधान नहीं।
(ख) सन्त कवियों में प्रमुख कबीर भक्त और कवि बाद में हैं, समाज सुधारक पहले हैं।

(ग) सन्त कवियों ने बाह्याडम्बरों का खण्डन किया।
(घ) सन्त कवियों ने अद्वैतवादी दर्शन को स्थान दिया।

- सन्त काव्य धारा के प्रमुख कवि :-

(क) कबीरदास
(ख) रविदास
(ग) नानक
(घ) सुन्दरदास
(ङ) दादू दयाल ... |

- सूफी काव्य परंपरा / प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा की विशेषताएँ :-

(क) प्रेमगाथाओं का नामकरण
(ख) अलौकिक प्रेम की व्यंजना
(ग) मसनवी शैली
(घ) चरित्र-चित्रण ... |

- राम काव्य परंपरा सामान्य विशेषताएँ :-

(क) राम-काव्य का विकास
(ख) राम का स्वरूप
(ग) मूल्य बोध एवं युग बोध
(घ) समन्वयवादी प्रवृत्ति ... |

- कृष्ण काव्य की सामान्य विशेषताएँ :-

(क) कृष्ण-लीला का वर्णन, (ख) प्रेमलक्षणा भक्ति
(ग) सौन्दर्य-चित्रण, (घ) रस योजना ... |

नाम- राहुल मिश्रा

Page No. :
Date :

Foot note (पाद टिप्पणी)

B.A. PART(I) SEM(~~II~~), पत्र संख्या - 4

हिन्दी साहित्य का इतिहास, आधुनिकाल

- **आधुनिक काल का उद्भव और विकास :-**

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छापेखाना की शुरुआत से आधुनिक काल का प्रारम्भ माना।

- डॉ. बच्चन सिंह ने 1857 से हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रारम्भ माना।

- रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को दो वर्गों में बाँटा है और इसके विकास पर चर्चा की है।

- **हिन्दी उपन्यास का विकास :-**

- हिन्दी उपन्यास के विकास को तीन चरणों में बाँटकर देखा जा सकता है।

(क) प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास,
(ख) प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास,
(ग) प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास।

- **हिन्दी कहानी का विकास :-**

- हिन्दी कहानी के विकास का अध्ययन करने के लिए इसे चार भागों में बाँट सकते हैं-

(क) प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी,
(ख) प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी,
(ग) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी,
(घ) नयी कहानी।

Page No. :
Date :

- हिन्दी नाटक का विकास क्रम :-

- हिन्दी नाटकों के विकास की परम्परा का अध्ययन करने हेतु उसे निम्न कालों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(क) भारतेन्दु युगीन हिन्दी नाटक,
(ख) प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक,
(ग) प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक।

- हिन्दी निबंध का विकास क्रम :

- संक्षेप में हिन्दी निबंध को चार कालों में विभक्त किया गया है।

(क) भारतेन्दु युग,
(ख) द्विवेदी युग,
(ग) शुक्ल युग
(घ) शुक्लोत्तर युग।

- हिन्दी आलोचना का विकास

- हिन्दी आलोचना सबसे पहले भारतेन्दु युग में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सामने आयी, धीरे-धीरे द्विवेदी युग में इसका विकास-विस्तार हुआ। हिन्दी आलोचना को - शास्त्रीय आलोचना, स्वच्छन्दतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना, ऐतिहासिक आलोचना आदि के रूपों में बांटकर देखने का प्रयास किया गया है।